मिशन शिक्षण संवाद

काव्यरूप

संस्कृत - VI

रचना

सतीश चन्द्र (प्र0अ0)

प्राथमिक विद्यालय अकबापुर

वि0 क्षे0 पहला, सीतापुर

बेसिक काव्य सृजन

पाठ-1, भारत वन्दना

हे! मातृ भू, आपको है नमन,
शत शत है नमन और वन्दन।
हे! मातृ भू माँ अवनि भारती,
आपको नमन, आपको नमन।।

आपके पर्वतों को भी नमन,
हर पुण्यतोया नदी को नमन।
वन और उपवन कुँज कानन,
सभी जनपदों को है नमन।।

आपके रजकण मस्तक लगा,
प्रत्येक अणु को मेरा नमन।।
उर अतल से प्रणिपात वन्दन,
हे! धरा भारती आपको नमन।।

अन्न-जल, प्राण देती सदा,
सुरक्षित हैं हम सब सर्वदा।।
शक्ति देती ऋद्धि सिद्धि देती,
भोग वैभव सब कुछ हो देती।।

हे! मुक्ति दात्री माँ को नमन,
सर्वदाता, विधाता, है नमन।
हर दिवस हर निमिष है नमन,
हे! माँ भारती शत-शत नमन।।

पाठ-2, पुनरावलोकनं

वचन को समझें, वचन को जानें,
पुंलिङ्ग, स्त्रीलिंग सब पहचानें।
संस्कृत में तीन वचन हैं होते,
पढ़ते पढ़ते रोज समझते।।

एकवचन

द्विवचन

एषः एषः, एतौ एते हम पढ़ते,
एतौ एते एतत् सभी समझते।
कौन है पुंलिङ्ग, कौन नपुंसक?
पाठ को सीखें, नित नित पढ़ते।।

बहुवचन

एषा एषा, एते एतत्,
एताः का अर्थ भी जानें।
स्त्रीलिंग का बोध हैं करते,
चित्र देखते, पाठ सीखते।।

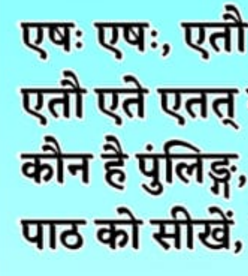

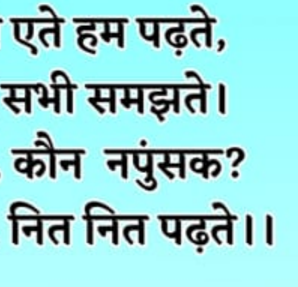

स्त्रीलिंग

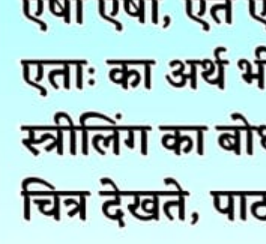

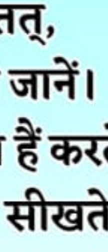

पुल्लिंग

नपुंसकलिंग

एतत् एते एतानि समझना,
एतानि, कानि को है पढ़ना।
पुष्पम्, फलम् फले हैं पढ़ते,
वचन में आओ इन्हें समझते।।

पठसि पठामि, पठथ,पठावः,
पठथः, समझें और पठामः।
पुरुष है मध्यम, पुरुष है उत्तम,
युष्मद्, अस्मद् सीखेंगे हम।।

युष्मद् अस्मद्, शब्द रूप को,
सभी पढ़ें हम आओ मिलकर।
शिक्षक बालक वार्ता जो है,
अर्थ बोध हो सोंच समझकर।।

पाठ- 3, अस्माकं परिवेशः (खण्ड-1)

खेलने को बाल चले हैं, गेंद लिये निज हाथ में आये।
संग में मित्र अनेक जहाँ, कोई दौड़ने को वहाँ आये।
नयन से निहारि रहे हम, बालायें भी मिलि खेल रही हैं।
शाला में है पुस्तक आलय, कुछ बालाएं तहँ जाय रही हैं।

हम सब आये हैं पढ़ने को, तुम भी तो आये पढ़न हो।
विद्या पाइके ज्ञानी बन जाओ, अभी तो बालक छोटे हो।
एक उद्यान सलोनी जहाँ, निज घर से सब आते वहाँ हैं।
माली सींचता है विरवन को, भौंरे गुंजन कर गीत सुनाते जहाँ हैं।

ऋतु आये विरवा सब उपवन के, फल फूलों से भर जाते हैं।
माली तोड़ पके फल सब, बाजार में बेंच के आते हैं।
हम सबके परिवेश की यह शोभा, धरती का रूप सजाती है।
बोलती कोकिला बोल है मीठे, ऋतुराज बसंत की ऋतु आती है।

पाठ- 3, अस्माकं परिवेशः (खण्ड- 2)

अहो मनोहर उपवन शोभा।
देखत मन अतिशय लोभा।।
प्रातकाल रवि किरन उगावै।
अलि गुंजत मधुराग सुनावै।।

कोकिल बोल कर्णप्रिय कितने।
जननी सींचति विरवा अपने।।
प्रातकाल सब आवैं उपवन।
बाग के अन्दर विचरैं जन जन।।

बरगद पीपर नीम रसाला।
शोभित विटप अनेक विशाला।।
खगकुल जा पर करहिं बसेरा।
पाकत फल आवै बहुतेरा।।

लता सुकोमल सरस सुहानी।
फूलहिं फूल सुरभि मनमानी।।
एकु तड़ाग मध्य मँह सुन्दर।
कमल खिलत बहु जाके अन्दर।।

तिरैं मत्स्य खेल करि नाना।
सँझा बालक खेलु मनमाना।।
विविध खेल करि घर को जावैं।
बालक बालिका भेद न लावैं।

वात प्रदूषण बढ़ै न भाई।
गाँव नगर यदि उद्यान लगाई।।
विरवा लगाये कछु नहि घाटा।
अज्ञानी नर जे विरवा काटा।।

पाठ- 4, उद्बोधनं

मत भाई अकड़ दिखाओ, अभिमान न लाओ।
अहंकार को दूर भगाओ, सम्मान सभी का करते जाओ।
राखो न दीनता, राखो न दुख को।
रहो प्रसन्न तुम, खुशियां मिलें सबको।(1)

झूठ न बोलो, बेकार न बोलो,
चलो सन्मार्ग पर, बुराई न कीजिए।
दुखियों की रक्षा, निर्धन को पालिए,
जैसे माँ पालती है पुत्र को, प्यार वैसा दीजिए।।(2)

लड़का पढ़ाओ, और लड़की पढ़ाओ,
शिक्षा का भेदभाव, दोष सब मिटाओ।
उपकार सदा करिए, उदार नित्य बनिए।
मन से चित्त से विकार सब मिटाओ।।(3)

मत पीना कुछ भी, जो होता निषिद्ध है।
नशे से दूर रहकर, पाना सद्बुद्धि है।
निमिष मात्र पल तुम समय न खोओ,
भजो भजन प्रभु के, भय कभी न लाओ।।(4)

पाठ- 5, मम् विद्यालयं (भाग-1)

चेतन कहाँ है स्कूल तुम्हारा,
उषा ने पूछा सब कुछ उससे।
यहीं नगर में मेरा है विद्यालय,
सुन्दर मन मोहक है सबसे।

पुस्तक आलय खेल का प्रांगण,
सुन्दर सा है मन को भाता।
कितनी किताबें और हैं कैसी?
रीडिंग कार्नर कौन चलाता?

विविध पुस्तकें विविध विषय की,
पढ़ो बैठकर मन न उबाता।
कितने शिक्षक हैं वहाँ पढ़ाते?
कैसा परिसर भवन दिखाता।

पाँच हैं शिक्षक हमें पढ़ाते,
ज्ञानी गुणी हैं कर्तव्य निभाते।
कोई उपवन क्या लगा वहाँ है,?
हाँ सुन्दर सुन्दर फूल हैं आते।

पाठ- 5, मम् विद्यालयं (भाग-2)

क्या क्या और बताओ विद्यालय,
कम्प्यूटर कक्ष भी एक वहाँ है।
नये नये से हैं वसन तुम्हारे,
इन्हें खरीदा दूकान कहाँ है?

अरे न जानो तुम स्कूल से मिलती,
जूता मोजा झोला पुस्तक मिलती।
दोपहरी में नित करते भोजन,
जहाँ रसोईघर, बनता है भोजन।।

धनेश्वरी ताई सुशीला संग में,
काकी किशोरी तीन रसोइया।
तब तो उत्तम है विद्यालय,
हाँ भगिनी देश के गौरव हैं विद्यालय।।

पाठ- 6, धरित्री रक्षत

यह धरती है निज माता के समान,
जिसके तल पर वन पर्वत नदियां महान।
हैं सूर्य, चन्द्रमा, जल, वायु आदि ,
प्रकृति विनिर्मित ये कितने अनादि!

पोषित करती है जन जीवन को,
भरती सबमें प्राण सदा दे चेतन को।
मानव का स्वार्थ बढ़ा है कितना!
कर रहा है दोहन संग अहित अपना।।

प्रकृति दोहता अँधाधुंध चला है,
बढ़ रहा प्रदूषण फिर नहीं भला है।
बढ़ रही निरन्तर मानव की आबादी,
वृक्ष काटते हैं वन की करते बरबादी।

खो रही प्रकृति की सुन्दरता है,
आ रही विपत्तियां कौन समझता है?
धरा बचाओ मानव पाने सुख विहान,
हम पुत्र सभी हैं यह धरती माँ के समान।।

पाठ- 7, विमानयानं रचयाम

राघव, माधव, सीता, ललिता,
आओ, हवाई जहाज बनाएँ।
विस्तृत निर्मल नील गगन में,
संग हवा के उसे उड़ाएँ।

ऊँचे ऊँचे पेड़ों, भवनो से ऊपर,
उड़ते आओ नभ के पार चलें।
पार हिमालय शिखरों को कर,
चन्द्र लोक तक चलो चलें।।

शुक्र, चन्द्रमा, सूर्य, गुरू तक,
सभी ग्रहों को आएँ गिनकर।
मोती सा इक हार बना लाएँ,
सुन्दर तारों को चुन चुन कर।।

नीरदमाला, अम्बर शोभा लेकर,
संग उसी के हम आ जाएँ।
दुखित किसान बिना वर्षा के,
उनके घर में खुशियाँ लाएँ।।

पाठ- 8, शंकराचार्यः (भाग-1)

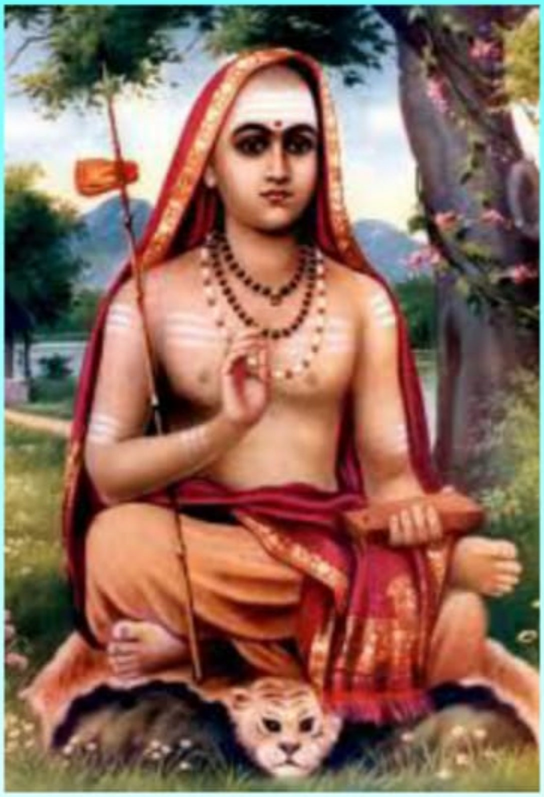

केरल राज्य में पूर्ण नदी तट,
बसा कालडी ग्राम।
सात सौ अट्ठासी ईस्वी जन्मे,
शंकराचार्य जी नाम।।

पिता नाम शिवगुरु था उनके,
आर्याम्बा थी माता।
बाल्यकाल में तात दिवंगत,
होनी रही विधाता।।

माँ आर्याम्बा ने पाला पोषा,
निज का कर्तव्य निभाया।
प्रतिभा बुद्धि अतुल शंकर की,
उसका परिचय करवाया।।

एक दिवस माता के संग,
वह नदी नहाने आया।
उसी बीच था मकर कही से,
आकर पैरों को जकड़ाया।।

पैर मकर के मुख में था जब,
शंकर माता से बोल उठा।
बेटे का सुनकर आर्तनाद,
माँ का अन्तर डोल उठा।।

पाठ- 8, शंकराचार्यः (भाग-2)

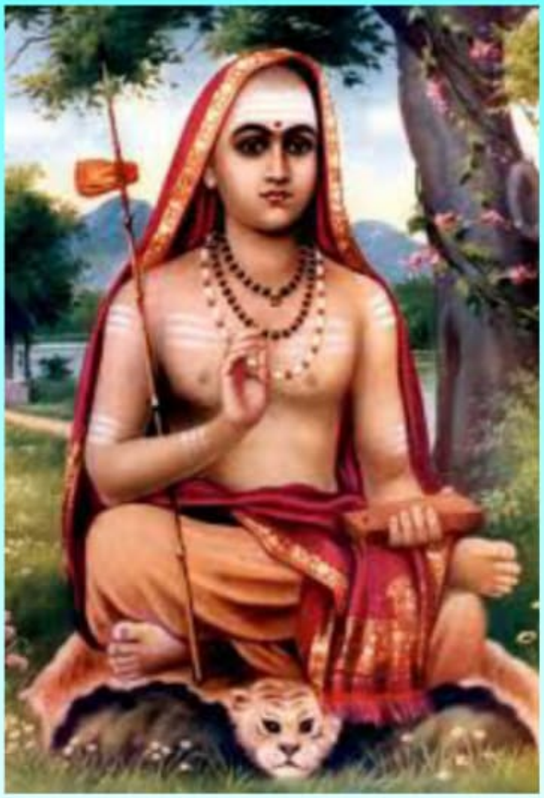

उसी समय वह बोला माते,
आज्ञा दो, सन्यासी होने को।
विवश मातु ममता वश,
आज्ञा दी, सन्यासी होने को।

अनुमति पाकर मुक्त हुआ वह,
नदी से बाहर आया।
आठ वर्ष की रही आयु थी,
ओंकारेश्वर क्षेत्र में आया।।

श्री गुरु गोविन्दपाद से चार वर्ष,
सविशेष ज्ञान था प्राप्त किया।
बारह वर्ष अवस्था थी उनकी,
सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया।।

सोलह बर्ष आयु शंकर की थी,
उनने ब्रह्मसूत्र का भाष्य किया।
सत्य सनातन संस्कृति के हित,
चार मठों का निर्माण किया।।

धर्म को दिव्य बना भारत में,
गरिमामय स्थान दिया।
बत्तीस वर्ष की अल्प आयु में,
ब्रह्मलोक प्रस्थान किया।।

पाठ- 9, नील श्रृंगालः (भाग-1)

वन का वासी एक सियार,
वह गाँव घूमने आया।
बाहर कुत्ते लगे भौंकने,
वह भागा और घबराया।।

धोबी का हौज नील का,
गिरा उसी में जाकर।
नीले पानी में रंग गया,
हतप्रभ बाहर आकर।।

वन में आया युक्ति लगायी,
सबको वही बताया।
देवी माँ ने वरदान दिया है,
सबको वहाँ बुलाया।।

आज से राजा मुझे मानिए,
आज्ञा का पालन करिये।
उचित सदा व्यवहार रहे,
अन्यथा दण्ड मिलेगा डरिए।।

सबने राजा उसको माना,
सिंहों बाघ सियारों ने।
सिंहों को साथ बिठाता,
तब सोचा उसके यारों ने।।

पाठ- 9, नील श्रृंगालः (भाग-2)

दुखी सियारों का मुखिया,
था बूढ़ा अनुभवी सयाना।
करूँ परीक्षा इसकी कोई,
उसने मन में फिर ठाना।।

हुए इकट्ठा साँझ सभी थे,
उसने अपना मुँह खोला।
सबसे बताया संग बोलिए,
समवेत सभी ने बोला।।

वह रंगा नीला जो सियार,
उसने भी वचन उचारे।
सच्चाई छिपी नहीं फिर,
वह हुए विवश बेचारे।।

सुनकर क्रोधित सिंह हुआ,
पकड़के उसको मारा।
कहते हैं स्वभाव न बदले,
खुलता राज है सारा।।

पाठ- 10, प्रहेलिकाः

आदि अन्त में न है जिसके,
बीच में अक्षर य है उसके।
वह तो हमारे और तुम्हारे,
बूझ बताओ नाम को उसके।।(1)

अस्थि मांस से रहित है होता,
वन का वासी वीर कहाए।
तलवार सरीखा काम करे वह,
करके फिर वन को जाए।।(2)

एक नैन का, नहीं है कौआ,
बिल में जाता पर साँप नहीं।
घटता बढ़ता नहीं है सागर,
बूझो बूझो वह चाँद नहीं।।(3)

शीतल जिसका हो उजियारा,
और कलाएँ नित हैं बढ़ती।
प्रिय चकोर को रूप लगे है,
जिसकी आभा ताप है हरती।।(4)

पक्षी नहीं पर रहे वृक्ष पर,
तीन नेत्र हैं, नहीं है शंकर।
बल्कल धारी सिद्ध न जोगी,
रूप घड़े सा जल है अन्दर।।(5)

पाठ- 11, गणतन्त्र दिवस समारोहः (भाग-1)

दो बालक करते हैं बात सुनो,
बात है अनुपय बात गुनो।
जैकब से है कहता प्रभाकर,
कल गणतन्त्र दिवस है सुनो सुनो।

कल हमें देखने तो जाना है,
संग सलीम चलेगा ठाना है।
तुम भी चलो संग मेरे भाई,
गणतन्त्र दिवस बेला है आयी।।

गणतन्त्र दिवस समारोह क्या?
इस पर कुछ मुझे बताओ।
क्या तुम नहीं जानते सच में,
संविधान उत्सव समझें आओ।

आरम्भ हुआ कब बतलाता हूँ,
जैसा गुरु जी ने मुझे बताया।
छब्बीस जनवरी सन् उन्नीस,
पचास बरस जब आया।

उसी दिवस था देश का अपने,
नया संविधान गया अपनाया।
तब से अब तक हर साल यही,
आयोजन है होता आया।

पाठ- 11, गणतन्त्र दिवस समारोहः (भाग-2)

सारे देश में हर विद्यालय में,
हर संस्थान हर कार्यालय में।
प्रातः राष्ट्र ध्वजा फहराते हैं,
सब राष्ट्र गान मिल गाते हैं।

स्कूलों में बच्चे कार्यक्रम करते,
खेल अनेकों मिल वहाँ खेलते।
आयोजन के अन्त समय पर,
मीठे मीठे फिर लड्डू बँटते।

भारत की राजधानी दिल्ली में,
इण्डिया गेट पर महामहिम जी आते।
भारत के सैनिक अभिनंदन करते,
राष्ट्रपति जी राष्ट्र संदेश सुनाते।

यह उत्सव हर राज्य में होता,
दिल्ली में लोक कला संगम होता।
बहुत लोग हैं देखने आते,
स्वाभिमान से फिर घर को जाते।

हर भारतवासी का है पर्व अनूठा,
कितना अच्छा है गणतन्त्र अनूठा।
जैकब ने फिर समझा इसको,
लाऊँगा संग बुलाकर सबको।।

पाठ- 12, चन्द्रशेखर आजादः (भाग-1)

देश पर प्राण न्योछावर जिन वीरों ने किया
उन्हीं क्रान्तिवीरों की गाथा सुनाऊँ।
अँग्रेजी हुकूमत से जो न डरा,
उस बलिदानी आजाद को माथा झुकाऊँ।

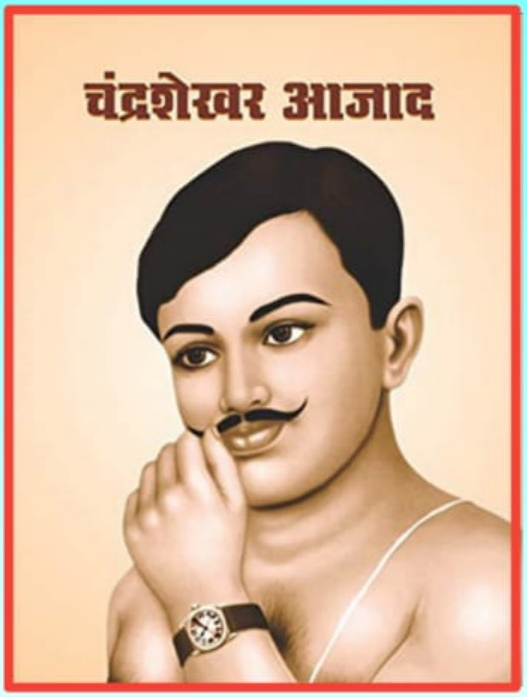

ग्यारह साल का वह बालक था जब,
जलियांवाला देश में काण्ड थ हुआ।
क्रूर नृशंस अँग्रेजी राज का अन्त करने,
उठायी शपथ और आन्दोलन किया।

शाला बनारस संस्कृत के छात्रों की,
वहीं अँग्रेजी विरोध प्रबल था किया।
आया जब युवराज इंग्लैंड से तब,
शासन का प्रतिकार उसने किया।

विद्यालय की सभा का ज्यों समापन हुआ,
तब आजाद को था जेल भेजा गया।
न्यायाधीश के सम्मुख लाया गया,
प्रश्नों के उत्तर वह देता गया।

पूछा था नाम पता न्यायाधीश ने,
आजाद ने निज को आजाद ही बताया।
स्वाभिमान है पिता हमारा,
कारागृह ही हमारा घर है बताया।

पाठ- 12, चन्द्रशेखर आजादः (भाग-2)

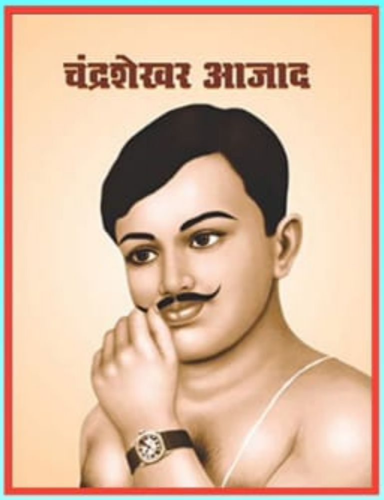

उद्दण्ड समझ जज ने तब,
पन्द्रह बेंतों का दण्ड सुनाया।
पीठ पर मार से बेंत रक्त बह चला,
बेहोश हुआ किन्तु नहीं घबराया।

जब साइमन कमीशन देश में आया,
बरसी थी लाला लाजपत की आई।
प्रतिशोध लिये आजाद,भगत सिंह,
शिवराम, राजगुरू, जयगोपाल की टोली आयी।

गोरे सैण्डर्स का वध करने को,
उस पर बन्दूक चलायी।
सैण्डर्स हुआ था ढेर वहीं फिर,
तब अँग्रेजी हुकूमत बौरायी।

क्रान्ति वीर आजाद मुक्त थे,
उनन्नीस सौ इकतीस माह फरवरी तिथि पाँच आयी।
अल्फ्रेड पार्क में आजाद थे आए,
अँग्रेजों की वहाँ पुलिस थी आयी।।

नाट बाबर ने गोली बहुत चलायी।
आजाद ने पिस्टल से अपने गोली खूब चलायी।
भीषण मुठभेड़ हुई थी, चली गोलियाँ,
अंतिम गोली खुद पर आजाद ने स्वयं चलायी।

पाठ- 13, काक:

एक था कौआ बहुत ही प्यासा,
मन में थी उसके जल की आशा।
बाग बगीचे गाँव नगर तक,
दौड़ा भागा पर रहा था प्यासा।।

सहसा उसको घड़ा एक दिखलाया,
देखा थोड़ा जल उसके तल में।
सोंचा फिर लाया कंकड़ के टुकड़े,
घड़े के अन्दर डाला जल में।।

बारी बारी से वो लाया कंकड़,
बहुत जतन से भरा घड़ा था।
धीरे धीरे जल ऊपर को आया,
देख के पानी मगन बड़ा था।।

पीकर पानी प्यास बुझाया,
मेहनत का फल उसने पाया।
बुद्धि लगाकर जतन जो करता,
सफल मनोरथ फिर अपने करता।।

पाठ- 14, रक्षाबन्धनम् (भाग-1)

श्रावण महीना तिथि पूरनमासी,
रक्षाबंधन पर्व मनाते भारतवासी।
बहनें अपने भैय्या के दांये हाथ में,
बांधतीं राखी सजी तरासी।।

देश के सैनिक जो रक्षक हमारे,
उनको भी राखी बाँधने जाते भाई बहन भी सारे।
बाँधके राखी हम संकल्प हैं लेते,
एक दूते की रक्षा के वचन हैं होते।।

इस दिन कोई पुरुष, बहन न जिसके,
जो भी बहन बाँधे राखी भाई समझकर।
मान की महिमा मान का रिश्ता,
सम्मान भरा फिर जीवन में रहता।।

भारत के इतिहास में दृषान्त है आता,
राखी का मान तभी समझ में आता।
कर्मवती चित्तौड़ की रानी संकट में भेजी राखी,
भाई हुमायूँ ने बहन की आन भी राखी।।

पाठ- 14, रक्षाबन्धनम् (भाग-2)

रक्षाबंधन के दिन होता,
उपाकर्म का भी विधान।
प्रायश्चित,स्वाध्याय, संस्कार,
करते जिसको ज्ञानवान।।

धर्मनिष्ठ सब साथ पुरोहित,
नदी सरोवर तट जाते हैं।
पावन जल में वहाँ नहाकर,
प्रायश्चित्त कर घर आते हैं।।

औषधि तन पर लेपित कर,
बार बार वे वहाँ नहाते हैं।
दिवस विशेष यह भारत में,
संस्कृत का दिवस मनाते हैं।।

राष्ट्र एकता का भाव लिए,
जन जन इसे मनाता है।
संस्कृति भारत की महान,
रक्षाबंधन बतलाता है।।

पाठ- 15, नीतिश्लोकाः (दोहे)

शान्ति जीतती क्रोध को,
दुरजन जन को साधु।
मिटै कृपणता दान से,
असत जयति है साँचु।।(1)

चींटी चलती जात है,
शत योजन लौ जाय।
विनता सुत गरुड़ उड़ाय,
कदम एक नहिं जाय।।(2)

संध्या पीजै दूध को,
भोर पहर में नीर।
भोजन करि माठा पिये,
वैद्य न आवै तीर।।(3)

तजै पुरुष छह दोष को,
धन वैभव अवरोध।
मंदकाज भय अलस निज
निद्रा तन्द्रा अरु क्रोध।।(4)

ज्ञानी निन्दा- स्तुति करैं,
लक्ष्मी आवै या जाय।
धीरपुरुष जन नीति से,
भटकि कबहुँ नहि पाय।।(5)

पाठ- 16, अहिंसायाः जयः

कोशल देश नगर प्राचीन हुआ,
जिसमें दस्यु भयंकर रहता।
अंगुलिमाल नाम था उसका,
पथिकों को लूटा मारा करता।।

जिसे मारता काट ले अँगुली,
और गले में हार पिरोता।
इसीलिए तो लोक में सारे,
था अंगुलिमाल कहाता।।

उसके अत्याचारों से जनता,
दारुण दुख में रहती थी।
राजा प्रसेनजित को इस कारण,
अतिशय चिन्ता रहती थी।।

राजा ने इसके निदान को,
सेना भेजी पर हाथ न आया।
भगवान बुद्ध का अनुयायी,
प्रसेनजित ने उन्हें बताया।।

सुनकर संकल्पित बुद्ध हुए,
उसे सतपथ पर लाने को।
तेज तपोबल ज्ञान से अपने,
चल दिए उसे समझाने को।।

वन के अन्दर जा पहुँचे फिर,
पथ में अंगुलिमाल मिला।
चकित हुआ वह देख उन्हें,
तपतेज वलय था खिला खिला।।

करुणा भरे हृदय से जब,
बुद्ध ने कुछ वचन कहे।
क्षण भर में उतरे अन्तर में,
नयनों से उसके अश्रु बहे।।

मिट गया अँधेरे का पर्दा,
अज्ञान नहीं था ठहरा।
त्यागा हिंसा अपराध सभी,
बुद्ध शिष्य का भाव धरा।।

हुआ शिष्य वह एक अहिंसक,
हिंसा पर विजय अहिंसा थी।
सच ही कहते शास्त्र हमारे,
सच्ची होती जीत अहिंसा की।।

पाठ- 17, प्रयाण गीतम्

कदम कदम बढ़ाओ तुम,
बालवीर आगे जाओ तुम।
जीत की अभिलाष भर,
विजय गीत गाओ तुम।।

तुम्हीं स्वतंत्रता के देनेवाले,
हो स्वाधीन देश के रखवाले।
स्वतंत्रता किरण सुवर्ण के,
तुम्हीं खुशियां सजाने वाले।।

अशोक चक्र जिसके मध्य है,
वहीं तिरंगा हस्त मध्य है।
भरो हृदय में भाव शौर्य वाले,
अदम्य साहस दिखाने वाले।।

मार्ग रोक दे कौन है समर्थ?
सागर और पहाड़ भी व्यर्थ।
दुश्मन को तुण हराने वाले,
तुम वीर हो सुवीर तुम निराले।।

वीर हो बढ़े चलो बढ़े चलो,
कदम कदम बढ़े चलो।
जीत के लिए स्वराष्ट्र के लिए,
सपूतों देश के बढ़े चलो।।